RJPP, Vol. XXII, No.I, Oct.23-Mar.24, ISSN (P) : 0976-3635, (e) :2454-3411
Impact Factor 8.858

हरि कृष्ण प्रेमी के नाटक ''रक्षाबन्धन'' में राष्ट्रीय–भावना

डॉ० शुभ्रा ज्योति
एसोसिएट प्रोफेसर
आर०एस०एस० पी०जी० कॉलेज, पिलखुआ, हापुड़
ईमेलः shubhrajyoti.rathi@gmail.com

सारांश

हिंदी नाटककारों में हरिकृष्ण प्रेमी का विशिश्ट स्थान है। उन्होंने हमें धर्मनिरपेक्षता, मानवतावाद, विश्व–बंधुत्व तथा राष्ट्रीय जागरण का संदेश दिया, जिसके लिए उन्होंने मध्यकालीन इतिहास से अनेक कथा प्रसंगों का सहारा लिया। उनके नाटकों का मुख्य स्वर प्रखर राष्ट्रीय चेतनायुक्त ऐतिहासिकता एवं सांप्रदायिक सौहार्द की मूल चेतना है। प्रेमी जी के नाटक जयशंकर प्रसाद के नाटकों की भांति सांस्कृतिक नाटक न होकर नैतिक प्रधान नाटक हैं, इनमें सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के स्थान पर राष्ट्रीय नैतिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया गया है। हरिकृष्ण प्रेमी के नाटक रक्षाबंधन में राष्ट्रीय भावना के सभी रूप पाए जाते हैं। नाटक की मुख्य घटना है– मेवाड़ की रानी कर्मवती का हुमायूं को राखी भेजकर अपना भाई बनाना तथा हुमायूं का यह संबंध स्वीकार कर चित्तौड़ की रक्षा करने का वचन देना। इस नाटक में प्रेमी जी संकुचित राष्ट्रीय स्तर से ऊपर उठकर मानवीयता की स्थापना करना चाहते हैं। रक्षाबंधन नाटक में प्रेमी जी की राष्ट्रीय भावना अत्यंत व्यापक रूप में परिलक्षित होती है।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 03.03.2024
Approved: 07.03.2024

डॉ० शुभ्रा ज्योति

हरि कृष्ण प्रेमी के नाटक ''रक्षाबन्धन'' में राष्ट्रीय–भावना

RJPP Oct.23-Mar.24, Vol. XXII, No. I,

PP. 057-063
Article No. 08

Online available at:
https://anubooks.com/view?file=3567&session_id=rjpp-march-2024-vol-xxii-no1-230

प्रसादोत्तर युग के प्रसिद्ध नाटककार हरि कृष्ण प्रेमी का जन्म 1908 ई० को मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले के गुना कस्बे में एक राष्ट्रभक्त परिवार में हुआ था। इस कारण राष्ट्रीयता उन्हें विरासत में मिली थी। वे बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे। हिंदी नाटककारों में हरिकृष्ण प्रेमी का विषिष्ट स्थान है। उन्होंने हमें धर्मनिरपेक्षता, मानवतावाद, विश्व–बंधुत्व तथा राष्ट्रीय जागरण का संदेश दिया, जिसके लिए उन्होंने मध्यकालीन इतिहास से अनेक कथा प्रसंगों का सहारा लिया। उनके नाटकों का मुख्य स्वर प्रखर राष्ट्रीय चेतनायुक्त ऐतिहासिकता एवं सांप्रदायिक सौहार्द की मूल चेतना है। भूतकाल के भव्य आदर्शो से वर्तमान का संस्कार कर मनुष्य को सुखी बनाने का उनका आयोजन टी० एस० इलियट के आदर्श को पूरा करता है। एक नाटककार के रूप में उन्होंने राष्ट्र प्रेम की धारा को सदैव आगे प्रवाहित करने का कार्य किया। उनके ऐतिहासिक नाटकों का उद्देश्य सांस्कृतिक न होकर राष्ट्रीय नैतिकता है। जयनाथ नलिन ने उनके विषय में ठीक ही कहा है ''ऐतिहासिक कथाओं में प्रेमी ने गांधीवादी राष्ट्रीय आदर्श की प्राण प्रतिष्ठा की है। गांधीवाद का प्रभाव प्रायः उनके सभी नाटकों में स्पष्ट है। यही गांधीवादी राष्ट्रीयता का आदर्श प्रेमी के नाटकों की प्रेरणा है।''[1]

प्रसादोत्तर युग में ऐतिहासिक नाटकों की परंपरा का पर्याप्त विकास हुआ। हरिकृष्ण प्रेमी जी ने अपने नाटकों में अति प्राचीन इतिहास को प्राथमिकता न देकर मुगलकालीन भारतीय इतिहास का वर्णन किया। उन्होंने इस काल के संदर्भ में आज की युगीन समस्याओं का वर्णन कर उनका समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया और इस क्षेत्र में वे सफल भी रहे। उन्होंने आज के भारत की राजनैतिक, धार्मिक व राष्ट्रीय समस्याओं की सफलतापूर्वक विवेचना की। देशभक्ति, आत्मोत्सर्ग, त्याग, सांप्रदायिक सद्भाव आदि उनके नाटकों के केंद्र बिंदु रहे। इतिहास का सहारा प्रेम व कल्पना की पुष्टि के लिए नहीं, अपितु आदर्श की स्थापना के लिए लिया। उनके प्रमुख नाटकों में रक्षाबंधन (1934), शिवा साधना (1930), प्रतिशोध (1937), स्वप्न भंग (1940), आहुति (1940), उधार (1940), शपथ (1951), प्रकाश स्तंभ (1954), कीर्ति स्तंभ (1955), संरक्षक (1958), विदा (1958), संवत प्रवर्तन (1959), सांपों की सृष्टि (1959), आज का मन (1961) आदि का नाम लिया जा सकता है। उनकी पहली नाट्य कृति 'स्वर्ण विहान' ऐतिहासिक न होकर एक गीति नाट्य है। 1930 में लिखित इस नाटक में गांधीवादी विचारधारा परिलक्षित होती है। नाटक का अंत हिंसा के ऊपर अहिंसा की विजय के साथ होता है।

जिस युग में हरिकृष्ण प्रेमी का आविर्भाव हुआ उस समय भारत परतंत्र था और स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए गांधी जी के नेतृत्व में निरंतर संघर्ष कर रहा था। ब्रिटिश शासक ''फूट डालो और राज करो'' की नीति का पालन करते हुए सफल हो रहे थे। हिंदू तथा मुसलमानों में परस्पर विद्वेश पैदा कर अंग्रेज आराम से शासन कर रहे थे। यह वैमनस्य ही आजादी के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा साबित हो रहा था। गांधी जी यह बात भली भांति जानते थे। वह इन दोनों संप्रदायों में परस्पर प्रेमभाव उत्पन्न करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील थे। प्रेमी जी भी गांधीवादी विचारधारा के समर्थक थे। उन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से इन विचारों को सशक्त करने का प्रयास किया। हिंदू मुस्लिम संघर्ष का समाधान खोजने वालों तथा इसके लिए सुझाव देकर पाठकों को जागरूक करने वालों में प्रेमी जी का स्थान सर्वोपरि है।

हरिकृष्ण प्रेमी के नाटकों का विषय भारत का मध्यकालीन इतिहास है जिसमें राजपूत मुसलमान संघर्ष की प्रमुखता है। प्रेमी जी के नाटक जयशंकर प्रसाद के नाटकों की भांति सांस्कृतिक नाटक न होकर नैतिक प्रधान नाटक हैं, इनमें सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के स्थान पर राष्ट्रीय नैतिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया गया है। इन नाटकों का मूल स्वर देश प्रेम है। भारत एक विस्तृत भूखंड है यहां अनेक धर्म, संप्रदाय और विचारधारा के लोग रहते हैं। कुछ संकीर्ण सोच वाले लोग राष्ट्रीय एकता को खंडित करते रहे हैं। एक स्थान पर प्रेमी जी ने लिखा है।

''भारत सब वर्गों, जातियों और धर्मो का है। सबमें भाईचारा होना चाहिए। सबको समान सुविधाएं और अधिकार प्राप्त होने चाहिए और सब राष्ट्रीयता की भावना से एक सूत्र में बंधे रहने चाहिए। मैंने अपने कुछ नाटकों के द्वारा इस कामना को सफल बनाने की दिशा में थोड़ा सा योगदान दिया है।''[2]

हरिकृष्ण प्रेमी के नाटक रक्षाबंधन में राष्ट्रीय भावना के सभी रूप पाए जाते हैं। देश प्रेम, देश का गौरव गान, मातृभूमि की रक्षा, शत्रु से संघर्ष, देश की एकता के लिए परस्पर सौहार्द्र, देश के लिए व्यक्तिगत स्वार्थ का त्याग। नाटक की मुख्य घटना है– मेवाड़ की रानी कर्मवती का हुमायूं को राखी भेजकर अपना भाई बनाना तथा हुमायूं का यह संबंध स्वीकार कर चित्तौड़ की रक्षा करने का वचन देना। यद्यपि हुमायूं समय पर पहुंच नहीं पाता और चित्तौड़ की रक्षा नहीं हो पाती। यह पूरा प्रसंग सांप्रदायिक सद्भाव का द्योतक है। नाटक के प्रारंभ में बहादुर शाह के छोटे भाई चांद खॉ से मेवाड़ का अधिपति विक्रम कहता है

''मजहब मनुष्य के हृदय के प्रकाश का नाम है। जो मजहब का नाम लेकर तलवार चलाते हैं वे दुनिया को धोखा देते हैं, धर्म का अपमान करते हैं। सच्चा वीर वही है, खरा राजपूत वही है जो न हिंदुओं के अन्याय का हिमायती है और न मुसलमानों के। वह न्याय का साथी है और आजादी का दीवाना है।''[3] एक अन्य स्थान पर विक्रम हुमायूं से कहता है ''हिंदू और मुसलमान यह दोनों ही नाम धोखा है हमें अलग करने वाली दीवारें हैं हम हिंदुस्तानी हैं।''[4] हुमायूं अपने सेनापति तातार खान को समझाते हुए कहता है ''आंखों से तअस्सुब का चश्मा हटाकर देखो जिन्हे हम दुश्मन कहते हैं वे सब हमारे भाई हैं। हम सब एक ही खुदा के बेटे हैं।''[5] रानी कर्मवती भी हिंदुओं और मुसलमानों में परस्पर प्रेम व भाईचारा बढ़ाने पर बल देती है। वह कहती है ''मुसलमान भी इंसान हैं। वे ईश्वर को खुदा कहते हैं मंदिर में न जाकर मस्जिद में जाते हैं क्या इसीलिए हमें उनसे धृणा करनी चाहिए?''[6]

हुमायूं हिंदुओं के पवित्र और मानवीय रस्मों रिवाजों को मुसलमानों द्वारा अपनाए जाने पर बल देता है। तातारखान को समझाते हुए कहता है ''हिंदुओं के अवतारों ने और तुम्हारे पैगंबर ने एक ही रास्ता दिखाया है। तुम सब एक ही परवरदिगार की औलाद हो।''[7] आज के युग में यह नाटक अत्यंत प्रासंगिक है। चारों ओर धार्मिक भेदभाव के कारण राष्ट्र की उन्नति बाधित होती है। मुगल काल में जिस प्रकार से हिंदुओं पर अत्याचार किए गए व उनके पूजा स्थलों को तोड़ा गया वह अत्यंत ही अमानवीय कृत्य था। नाटक में एक स्थान पर शाहशेख औलिया बहादुर शाह द्वारा मंदिरों और मूर्तियों को तोड़े जाने की निंदा करता हुआ कहता है ''तुझे अपनी बादशाहत ही बढ़ानी है तो बढ़ा,

पर हिंदुओं के मंदिरों को, गरीब इंसानों की इबादतगाहों को क्यों तुड़वाता है? तुम्हारे इस काम से सारी मुस्लिम कौम शर्मिंदा है।''[8]

भारत एक विशाल व नैसर्गिक सुषमा संपन्न राष्ट्र है। जिस प्रकार चंद्रगुप्त नाटक में प्रसाद जी ने यूनानी युवती कार्नेलिया के मुख से भारत राष्ट्र की प्राकृतिक सुषमा का वर्णन कराया है उसी प्रकार रक्षाबंधन नाटक में चांद खान भारत के नैसर्गिक सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहता है ''कितना खुशनुमा है आपका देश महाराणा! आसमान से बातें करने वाले हरे–भरे पहाड़, कल–कल छल–छल करते हुए नाचते कूदते झरने, समंदर से होड़ करने वाले तालाब, बहितृ के बगीचों को मात करने वाले बाग, घने जंगल! कुदरत ने गोया अपनी सारी दौलत यही बिखेर दी है। यहां की सुबह जिंदगी के गीत गाते हुए आती हैं और यहां की शाम हमदर्दी की तान छेडती हुई जाती है। यहां की रात राहत की सेज बिछाती हुई आती है। तभी तो दुनिया इसे लालच की निगाह से देखती है, तभी तो आए दिन इसे दूर–दूर के शाही लुटेरों का मुकाबला करना पड़ता है।''[9]

नाटक के पात्र देशभक्ति की भावना से उत्प्रोत हैं। वे मातृभूमि पर अपना सर्वस्व न्योछावर करने की प्रेरणा देते हैं। बाघ सिंह, भीलराज, अर्जुन सिंह आदि पुरुष पात्र तथा जवाहर बाई जैसी स्त्री पात्र मातृभूमि के लिए लड़ते–लड़ते अपने प्राणों का बलिदान कर देते हैं। वे मर जाना पसंद करते हैं परतंत्र होकर जीना उन्हें सहन नहीं। बहादुर शाह मेवाड़ के वीर राजपूतों की वीरता की प्रशंसा करते हुए कहता है ''क्या तुमने उन राजपूतों को नहीं देखा जो घायल होकर पड़े हुए थे? हमें किले में दाखिल होते देखकर उन्होंने अपने हाथ से अपने कलेजे में छुरी मार ली। ऐसे पानी दार लोगों पर हुकूमत करने का सपना देखना हवा में किले बांधना है।''[10] राजपूत वीरांगनाएं जौहर की अग्नि में भस्म होकर अपनी वीरता का परिचय देती हैं।

देश की प्रगति में सबसे अधिक बाधक धार्मिक व जातिगत भेदभाव है। विक्रम धर्म और जाति को अनदेखा कर चांद खान को आश्रय देता है उसके जीवन की रक्षा करने के लिए वह प्रतिबद्ध रहता है। वह कहता है ''वास्तव में मनुष्यता या पशुता पर किसी धर्म या जाति का एकाधिकार नहीं है। कुछ आदमियों के गुण दोष को पूरी कौम के मत्थे मढना ऐसी गलती है जिसे लोग गलती ही नहीं समझते और इसीलिए उसे सुधार नहीं सकते।''[11] रानी कर्मवती भी धार्मिक भेदभाव से ऊपर उठने की बात करती है। हुमायूं और विक्रम सिंह के परस्पर संवादों में भी इन्हीं भावों की अभिव्यक्ति हुई है। विक्रम कहता है ''हिंदू और मुसलमान यह दोनों नाम धोखा है, हमें अलग करने वाली दीवारें हैं। हम सब हिंदुस्तानी हैं।''[12]

प्रेमी जी ने अपने इस नाटक में मेवाड़ की गरिमा का गौरव–गान करके राष्ट्रीयता की भावना को सफल बनाया है। उन्होंने देश प्रेम से ओत्प्रोत गीतों का सृजन किया है। इन गीतों के माध्यम से परतंत्रता की बेडियों में जकड़ी हुई युवा पीढ़ी को जगाने का प्रयास किया है। ये गीत देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष की प्रेरणा देते हैं। राजपूत रमणियों द्वारा गया गया यह गीत अपने भाइयों को मातृभूमि पर बलिदान हो जाने के लिए प्रेरित करता है।

''तार तार में भरकर प्यार, लाई हम राखी अविकार
इनको करो वीर स्वीकार,

फिर रिपु पर टूटो बन गाज, वीर, मरण के सजा लो साज''[13]

इसके अतिरिक्त चारणी द्वारा गाए गए गीतों के माध्यम से नाटककार आत्मोत्सर्ग करने तथा पराक्रम प्रदर्शित करने के लिए वीरों को प्रेरित करने का प्रयास करता है–

''आज शक्ति का तांडव हो।
युग युग से है खप्पर खाली, सोच विचार न कर अब काली।
भर उसमें लोहू की लाली।''[14]

महिषासुर मर्दिनी का आह्वान करता हुआ यह गीत वीरों को शत्रुओं का संहार करने की प्रेरणा देता है। चारणी को जब यह पता चलता है कि गांव वाले शत्रुओं से अपने प्राण बचाने के लिए मेवाड़ छोड़कर अन्यत्र भाग जाना चाहते हैं तब वह मेवाड़ वासियों को इस कायरता को त्याग कर मातृभूमि की रक्षा करने के लिए प्रेरित करने के लिए गीत गाती है–

''वीरों समर भूमि में जाओ।
सोचो तो मेवाड़ निवासी, मां को होने दोगे दासी,
ओ! बलिदानों के विश्वासी,
आगे कदम बढ़ाओ, वीरों समर भूमि में जाओ।''[15]

राजपूत स्त्रियां जौहर की चिता में बैठने से पहले जो गीत गाती हैं, वह भी बलिदान की प्रेरणा देता है–

''सजनि, मरण को वरण करो री
भली जली जौहर की ज्वाला, लेने आया पीहर वाला,
वह लपटों का ओढ दुशाला, अब उसका अनुसरण करो री।
सजनि, मरण को वरण करो री।''[16]

पहले अंक में चारणी द्वारा मेवाड़ के गौरवपूर्ण इतिहास को स्मरण करता हुआ यह गीत वस्तुतः भारत के अतीत का ही गौरव गान है। देशवासियों के मन से हीनता की भावना दूर कर आत्मविश्वास और आत्मसम्मान का भाव जागृत करता है–

''धन्य धन्य मेवाड़ महान!
हिमगिरि सा उन्नत यह मस्तक अखिल विश्व का है अभिमान।
सदियों से चढ़ते आए हैं तुझ पर लक्ष लक्ष बलिदान।''[17]

इस नाटक में प्रेमी जी संकुचित राष्ट्रीय स्तर से ऊपर उठकर मानवीयता की स्थापना करना चाहते हैं। वे गांधीवादी विचारधारा से अत्यधिक प्रभावित थे। स्वतंत्रता संग्राम के संघर्ष में गांधी जी का योगदान अप्रतिम था। उन्होंने नमक सत्याग्रह, खादी, चरखा, अस्पश्यता उन्मूलन, प्रौढ़ पाठशाला आदि के माध्यम से राष्ट्रवाद व स्वतंत्रता आंदोलन की चेतन को गांव–गांव घर–घर तक पहुंचाने का प्रयास किया। गांधी जी के इसी भाव से प्रेरित होकर प्रेमी जी ने भी रक्षाबंधन नाटक में श्यामा, चारणी, माया आदि पात्रों के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम की भावना को गांव–गांव तक पहुंचाने का प्रयास किया। चारणी कहती है ''तो चलो हमें अभी ग्राम ग्राम जाकर एक बड़ी सी सेना

एकत्र करनी है।''[18] इसी प्रकार भीलराज भीलो की एक सेना तैयार कर शत्रु का सामना करने के लिए तत्पर होता है।

रक्षाबंधन नाटक में जहां प्रेमी जी ने राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रीय एकता, शौर्य, पराक्रम, मातृभूमि के लिए आत्मोत्सर्ग आदि भावों को अभिव्यक्त किया है वहीं शोषित, दलित व अभावों से ग्रसित जन की सेवा करने के लिए भी प्रेरणा दी है। ये दोनों ही भाव राष्ट्रीय भावना के द्योतक हैं। श्यामा इस नाटक में गरीबों और अनाथों की सेवा करती हुई दिखाई देती है। वह कहती है ''मैंने अपनी रुचि के अनुरूप कार्य चुन लिया है। मेरा हृदय गरीब के अनाथ बच्चों को अपने बच्चे बना लेना चाहता है, उनकी सेवा में अपने को भुला देना चाहता है।''[19] विजय सिंह जो एक वीर तथा पराक्रमी है कहता है, ''वास्तव में हम दोनों का लक्ष्य एक ही है मां। तुम यदि पीड़ितों की सेवा करना चाहती हो तो मैं उनकी सहायता करना। मेरा कार्य जहां समाप्त होता है तुम्हारा कार्य वहीं प्रारंभ होता है।''[20]

इस प्रकार रक्षाबंधन नाटक में प्रेमी जी की राष्ट्रीय भावना अत्यंत व्यापक रूप में परिलक्षित होती है। यह केवल स्वाधीनता आंदोलन की सीमाओं में नहीं बंधी है अपितु मानवता की सेवा को भी इससे जोड़ा है। यह भाव पात्र, संवाद, भाव, विचार, गीत आदि माध्यमों से व्यक्त करने का सफल प्रयास किया गया है। यद्यपि आदर्श की स्थापना करने में प्रेमी जी ने अनेक ऐतिहासिक तथ्यों को अनदेखा कर कल्पना के माध्यम से अपने पक्ष को बल देने का प्रयास किया है जिसमें वे काफी सफल भी रहे हैं। ''प्रेमी जी के जीवन की करुणा ने ही उन्हें मातृभूमि की ममता की ओर उन्मुख किया। ––––– सच तो यह है कि प्रेमी जी के सभी ऐतिहासिक नाटक भारत की राष्ट्रीय भावना को व्यक्त करने के लिए लिखे गए।''[21]

संदर्भ

1. नलिन, जय नाथ. (1961). हिंदी के नाटककार. द्वितीय संस्करण. पृष्ठ **115.**
2. प्रेमी, हरिकृष्ण. विदा. प्रस्तावना. पृष्ठ **3–4.**
3. प्रेमी, हरिकृष्ण. (1990). रक्षाबंधन. हिंदी भवनः 63 टैगोर हाउस, इलाहाबाद. 44वां संस्करण. पृष्ठ **17.**
4. वही. पृष्ठ **95.**
5. वही. पृष्ठ **39.**
6. वही. पृष्ठ **30.**
7. वही. पृष्ठ **40–41.**
8. वही. पृष्ठ **46–47.**
9. वही. पृष्ठ **15.**
10. वही. पृष्ठ **91.**
11. वही. पृष्ठ **19.**
12. वही. पृष्ठ **95.**
13. वही. पृष्ठ **27.**

14. वही. पृष्ठ **56.**
15. वही. पृष्ठ **50.**
16. वही. पृष्ठ **83.**
17. वही. पृष्ठ **11.**
18. वही. पृष्ठ **53.**
19. वही. पृष्ठ **80.**
20. वही. पृष्ठ **80.**
21. बटुक, विश्वनाथ प्रसाद. नाटककार हरिकृष्ण प्रेमी—व्यक्तित्व एवं कृतित्व. बंसल एंड कंपनीः 24 दरियागंज दिल्ली 6. पृष्ठ **3.**